शुंग कौन थे। उनकी सामाजिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक उपलब्धियों का विश्लेषण कीजिए।

Ans → 183 BC में मौर्य के तत्कालीन उत्तराधिकारी शुंग हुए जो ब्राह्मण परिवार के थे। शुंग वंश का संस्थापक पुष्यमित्र शुंग था और यह मौर्यों का सेनापति भी था। इसी अन्तिम मौर्य शासक बृहद्रथ की हत्या करके गद्दी प्राप्त की थी। इस आंतरिक क्रांति के पीछे सम्भवतः यही अभिप्राय था कि मगध साम्राज्य की प्रतिष्ठा बचा ली जाये। अशोक के उत्तराधिकारी अयोग्य साबित हुए थे और बढ़ती हुई साम्राज्य की अराजकता तथा उसके टूटने की प्रक्रिया पर नियन्त्रण पाने में वे असमर्थ हो रहे थे, इतना ही नहीं वे बाहरी यूनानी आक्रमणों को रोक पाने में भी असमर्थ हो रहे थे।

जब पुष्यमित्र शुंग शासक बना तो दक्षिण में उसके साम्राज्य का विस्तार नर्मदा नदी तक था। उसकी पश्चिमी सीमा कुछ अनिश्चित सी रही परन्तु परम्परागत स्रोतों के अनुसार पुष्यमित्र शुंग के वंश का पंजाब के जालन्धर तथा सियालकोट के क्षेत्र तक था।

मगध पर अधिकार जमाने के बाद पुष्यमित्र शुंग ने सर्वप्रथम अपनी शक्ति को सुदृढ करने और ध्यान दिया। कोशल, वत्स, अवन्ती जो अभी भी मगध साम्राज्य के अधीन थे, को पुष्यमित्र शुंग ने संगठित किया। अवन्ती पर पाटलीपुत्र का नियन्त्रण ढीला हो गया था। अतः पुष्यमित्र शुंग सत्ता प्राप्त करके विदिशा नगर को अपनी दूसरी राजधानी बनाया तथा अग्निमित्र को वहाँ का प्रतिनिधि नियुक्त किया। इस प्रकार अपनी स्थिति को सुदृढ़ करके मगध की खोई प्रतिष्ठा प्राप्त करने का प्रयास पुष्यमित्र शुंग ने आरंभ किया।

सर्वप्रथम पुष्यमित्र शुंग के समय शुंगों ने अपने पड़ोसी विदर्भ के साथ युद्ध किया। विदर्भ का नेता यज्ञसेन था। अन्तिम मौर्य शासक बृहद्रथ की हत्या के पश्चात् यज्ञसेन ने संभवतः राजनैतिक अव्यवस्था का लाभ उठाकर अपने आपको स्वाधीन घोषित कर दिया। विदर्भ को पुनः शुंग साम्राज्य में मिलाने का दायित्व पुष्यमित्र शुंग के पुत्र अग्निमित्र को सौंपा गया था। इस संघर्ष का परिणाम स्पष्ट नहीं है शायद यज्ञसेन ने शुंगों का प्रभुत्व स्वीकार कर लिया था। शुंग साम्राज्य का एक अंग

गंभीर यूनानी आक्रमण से खतरा था। यूनानियों की लड़ाई प्रतीत पर पतंजलि या कालिदास ने भी प्रकाश डाला है। इन स्रोतों से पता चलता है कि यूनानी गंगाघाटी में दूर दूर तक प्रवेश कर चुके थे और एक ऐसा भी समय आ गया था जब यह पाटलिपुत्र पर भी हमला करने वाले थे किन्तु इस आक्रमण का उत्तर अग्निमित्र के पुत्र वसुमित्र ने यवनों को सिंधु के तट पर पराजित किया। वसुमित्र की इस विजय की खुशी में पुष्यमित्र दो सफल अश्वमेध यज्ञ किये थे। राजनीतिक दृष्टिकोण से इन यज्ञों का उद्देश्य एक नये साम्राज्य की उत्थान की घोषणा करना था।

33 वर्ष शासन करने के बाद 150 B.C में पुष्यमित्र का देहान्त हो गया। इसके महत्वपूर्ण उत्तराधिकारी अग्निमित्र और वसुमित्र हुए। इन दोनों ने अपनी सैनिक योग्यता तभी दिखायी थी जब वे युवावस्था में थे। इन वंश के अन्य शासकों राजनीतिक प्रभाव नहीं रहा केवल एक के अतिरिक्त और यह शासक बेसनगर के स्तम्भ शिलालेखों से जाना जाता है। इस सीमा पर बसने वाले यूनानी शासकों के दरबार से दूतों का आदान-प्रदान किया था। इस अन्तिम तथ्य से तात्पर्य यह है कि यूनानी आक्रमणकारी न केवल पीछे हटा दिये गये बल्कि वे शुंगों की ताकत को इज्जत की नजर से देखते थे।

संस्कृति दृष्टिकोण से शुंगों ने ब्राह्मणवाद को अत्यन्त ही प्रोत्साहित किया। पुष्यमित्र के काल में अश्ववली का उतना ही धार्मिक महत्व रहा जितना राजनीतिक कुछ हद तक तो शुंगों के काल में एक नवीन ब्राह्मणवादी आन्दोलन शुरू हुआ जो गुप्तकाल तक अपने चरमसीमा तक पहुँचा। कुछ बौद्ध स्रोतों के अनुसार पुष्यमित्र ने बौद्ध धर्म के अनुयायियों को सताने की भी कोशिश की थी तथा उनके धार्मिक स्थानों और स्तूपों को नष्ट भी किया था परन्तु पुरातात्विक स्रोतों के अनुसार देखा जाए तो यह बात बिल्कुल निराधार सा लगता है क्योंकि साँची और भरहुत के स्तूप पुष्यमित्र के समय ही अलंकृत किये गये थे। यद्यपि पुष्यमित्र स्वयं कट्टर ब्राह्मणवादी था फिर भी इस हिन्दू धर्म में उदारता भी कुछ नहीं थी। विदेशियों को इसमें स्थान दिया जा सकता था।

ब्राह्मणवाद

भागवत धर्म एक नई धार्मिक शक्ति के रूप में उभर रहा था जिसके सदस्य विदेशी भी हुआ करते थे।

कला: कला भी इस काल में काफी प्रगतिशील रही इसके प्रगति का सुन्दर उदाहरण भरहुत की स्तूप की सुआनुका कारीगरी में देखा जाता है कि इसके अतिरिक्त यह भी बताया जाता है कि साँची स्तूप की एक द्वार की सुन्दरता को चार चाँद लगाने वाले कारीगर विदिशा के ही थे जो हाथी दाँत बनाने में कुशल थे।

इसके अतिरिक्त कला के आलोचक हमारा ध्यान इस बात की ओर आकर्षित करते हैं कि शुंग काल भारतीय कला के इतिहास में एक नया मोड़ था। शुंगकाल के पूर्व स्तूपों की रेलिंग आदि उसकी सुन्दर नक्काशी लकड़ी के माध्यम से ही होती थी, परन्तु इस काल से पत्थर को कला का माध्यम बना लिया गया।

(लकड़ी के स्थान पर पत्थर को कला का माध्यम)

शुंगकाल को देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि भारतीय कला में एक ऐसा अभ्यास शुरू किया गया जिसकी बाद में अत्यन्त प्रशंसा हुई, बहुत हद तक शुंगकालीन मूर्तियों को देखने से स्पष्ट हो जाता है कि भारतीय कला महान गुप्तकालीन कला की ओर बढ़ रही है परन्तु शुंग काल की अपनी विशेषताएँ थीं उसमें जनसाधारण की रुचि और प्रोत्साहन नजर आती है तथा शुंग कला मौर्य काल की तरह दरबारी कला नहीं है। अतः इसको पूर्णतः स्वदेशी कहा जा सकता है।

संस्कृत: संस्कृत भाषा के क्षेत्र में शुंगकाल की सर्वोच्च उपलब्धि पतंजलि की महाभाष्य है जो ~~पाणि~~ पाणिनी की व्याकरण की एक व्याख्या है। यद्यपि ग्रन्थों का कुछ अभाव है फिर भी यह करीब-करीब निश्चित ही है कि इस काल में संस्कृत को प्रोत्साहित करने वाले कुछ और भी ग्रन्थ रहे होंगे।

निष्कर्ष: शुंग वंश का महत्व इस तथ्य में पाया जाता है कि शुंगों ने कुछ समय तक मगध के साम्राज्य को पूरी तरह छिन्न-भिन्न नहीं होने दिया। विशाल मौर्य साम्राज्य के कुछ भाग तो अलग ही हो गए थे लेकिन शुंगों ने कुछ ऐसी राजनीतिक विधि अपनाई, जिससे समान साम्राज्य को टूटने से बचा लिया गया। उन्होंने अनेक स्थानीय सरदारों के अर्ध स्वायत्तता को बरकरार नहीं रखा और उन-

धीरे-धीरे नियन्त्रण किया। इसके अलावा शुंगों ने यूनानी आक्रमण को भी रोक दिया और इसके उन्होंने इतनी सफलता प्राप्त की कि यूनानियों ने युद्ध के बदले इनसे मिलकर रहना ही उचित समझा। धर्म के क्षेत्र में शुंगों ने ब्राह्मणवाद को पुनः जीवित रखा लेकिन इसके बावजूद भी उन्होंने दूसरे धर्मों के प्रति सहिष्णुता की नीति अपनाई। कला और साहित्य पर भी शुंगों दरबार का प्रभाव पड़ा। अतः बिना किसी लम्बी अवधि तक शासन किये बगैर शुंगों ने राजनीतिक और सांस्कृ-तिक क्षेत्रों में सराहनीय योगदान दिया।

---x---